आपने लिखा

गागर में सागर समेटे 'संदर्भ' अंक-73 यूँ तो सात-आठ सप्ताह पहले ही मिल गया था परन्तु इसे पढ़ने का समय अभी मिल पाया। मैंने पिछले कई अंकों को पढ़ा ज़रूर था, लेकिन अपनी प्रतिक्रियाएँ भेजने का सिलसिला कुछ कम-सा हो गया था। इस अंक में 'आपने लिखा' कॉलम एक तिहाई पृष्ठ में सिमटकर रह गया था। क्या सभी लोग मेरी तरह ही असंवेदनशील हो गए हैं। पाठकों के पत्र भी कई बार बहुत ज्ञानवर्धक होते हैं।

इस अंक में 'संदर्भ' के सभी लेख मेरी पसन्द और मेरी समझ के अनुरूप लगे। डेनियल ग्रीनबर्ग का लेख 'देर सवेर बच्चे पढ़ना सीख ही जाते हैं' और के.आर. शर्मा का लेख, 'शिक्षा को दिलचस्प बनाने का एक जतन' बहुत आशा-जनक एवं प्रेरणाप्रद लगे। डेनियल ग्रीनबर्ग ने सही कहा है, "ईमानदारी से कहूँ तो हमें बिरले ही ये पता चलता है कि वे पढ़ना सीखते कैसे हैं।" वास्तव में यह 'गूँगा और गुड़ का स्वाद' वाली बात है।

मेरे स्कूल में एक मानसिक विमन्दित बालक है जिसकी उम्र लगभग 10 वर्ष है। उसे स्कूल आते हुए चौथा साल है पर वह आज भी 'क' और 'A' को ठीक से नहीं पहचान पाता। यहाँ तक कि उसे गणित के अंक और भाषा के वर्णों में अन्तर भी पता नहीं। एक ही वर्ण को वह कभी 'ए' तो कभी 'क', कभी 'बी' कहता है। परन्तु ताज्जुब की बात यह है कि वह साधारण बच्चों की तरह वर्णमाला या किसी लेख कि पंक्ति को हू-ब-हू उतार देता है। यानी कोई-न-कोई अन्तःप्रेरणा काम कर रही है।

के.आर. शर्मा ने अपने जो अनुभव बताए हैं वे एक संवेदनशील, उद्यमी, सृजनशील और मनोवैज्ञानिक शिक्षक की सही तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। परन्तु अफसोस की बात है कि पिछले 8-10 वर्षों में जिस तरह नियमों को ताक पर रखकर धड़ाधड़ शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के नाम पर जो शोषण के अड्डे स्थापित किए जा रहे हैं वे देश की भावी पीढ़ी के साथ धोखे के काग भगोड़े तैयार कर रहे हैं।

आवर्त सारणी जैसे नीरस विषय पर सैम कीन ने बहुत रोचक ढंग की जानकारी दी जिससे मुझे आशा है कि यह कला-वर्ग के शिक्षकों को भी अच्छा लगेगा। इस सारणी के बारे में नई बात भी पता चली कि यह आज भी अद्यतन हो रही है।

'ओह पंचायत' लेख में अलेक्स एम.जॉर्ज ने सामाजिक विज्ञान विषय की क्षेत्रीय विषमताओं और सीमाओं के बारे में चेताया है कि यह विषय सब जगह एक ही जानकारी के आधार पर नहीं पढ़ाया जा सकता।

गुणा लेख भी इस बात का उदाहरण है कि किस तरह एक अवधारणा को व्यवहारिक बनाकर पढ़ाया जा सकता है।

रिनचिन की कहानी 'सही गलत', बच्चों की दुनिया में बड़ों द्वारा जाने-अनजाने किए जाने वाले अन्याय को रेखांकित करती है, जो अध्यापकों की असंवेदनशीलता के कारण उपजता है। इन्हीं घटनाओं के कारण स्कूल बच्चों को उत्पीड़न-घर लगने लगते हैं।

इतने अच्छे लेखों के लिए 'संदर्भ' को पुनः धन्यवाद।

रमेश जांगिड़
भिरानी, राजस्थान